कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

① आधुनिक काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि।

आधुनिक हिन्दी कविता के नवकाल विकास की दृष्टि से कविता को तीन भागों में बांटा गया है,

① पूर्वछायावाद युग (नवजागरण तथा पूर्वस्वच्छन्दतावाद काल) जिसके अन्तर्गत भारतेन्दु और द्विवेदी - युग आते है।

② छायावाद युग (स्वच्छन्दतावाद काल)

③ उत्तर छायावाद युग (उत्तर स्वच्छन्दतावाद काल)

इस काल विभाजन का आधार छायावाद ही है। पूर्व छायावाद युग बहुधा जिन प्रवृत्तियों का आगमन भारतेन्दु काल में होता है द्विवेदी काल में वे पल्लवित और विकसित होती है और कदाचित उन्हीं प्रवृत्तियों की प्रतिक्रिया में छायावाद का उदय हुआ छायावाद की प्रतिक्रियास्वरूप उत्तर छायावाद युग में नूतन प्रवृत्तियों का उदय होता है।

(क) पूर्व छायावाद युग — भारतेन्दु युग (नवजागरण / पुनर्जागरण काल) यह काल आधुनिक हिन्दी साहित्य का द्वार है इस काल में जहाँ कविता सम्बन्धी नवीन विषयों का ग्रहण हुआ, वहाँ कविता की पुरानी परम्परा का संरक्षण भी हुआ भाव क्षेत्र और कला क्षेत्र में दोनों में इस समय के लेखकों की स्वभावगत सामंजस्यता, जोकि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की उपज थी।

(2) कविता के क्षेत्र में भी प्रतिफलित हुई। इस युग के साहित्यकार कवि की अपेक्षा समाज-सुधारक, प्रचारक और पत्रकार अधिक थे। परिणामत: इन्होंने अपने-अपने पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दू-समाज में प्रचलित कुरीतियों, धार्मिक, मिथ्याचार, छल-कपट, अमीरों की स्वार्थपरता, पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगे हुए शिक्षित वर्ग की कटु आलोचना, पुलिस और कर्मचारियों की लूट-खसोट, अदालतों में प्रचलित अन्याय-अनीति, उर्दू के प्रति सरकार का पक्षपात, देश की सामान्य दुरवस्था, अकाल-महामारी के प्रकोप, अंग्रेजी शासन के आर्थिक शोषण आदि। क्योंकि उसे सामयिक प्रश्नों और समस्याओं के प्रति समाज को जागरूक करना था। दूसरी ओर भारतेन्दुकालीन कविता में रीतिकालीन श्रृंगारी परम्परा का भी निर्वाह होता रहा।

भारतेन्दुकालीन कविता के विकास में भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास और बद्रीनारायण चौधरी का नाम उल्लेखनीय है इन सभी कवियों की वाणी में देशभक्ति और राजभक्ति का स्वर ऊँचा है भारतेन्दु जी 'भारत दुर्दशा' और 'नीलदेवी' नामक नाटकों के गीतों में तथा अन्य स्फुट कविताओं में भारत की दीन दशा का वर्णन किया है। - "आवहु

③ सब मिलि रोवहु भाई, हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।" इनकी कविता मे कहीं देश के अतीत गौरव की गर्वगाथा, कहीं वर्तमान अधोगति की क्षोभभरी वेदना, कहीं भविष्य की भावना से जगी हुई चिन्ता, कहीं भक्ति के पद, कहीं श्रृंगार रस के कवित्त और सवैया, कहीं उपदेश है भारतेन्दु जी ने हिन्दी कविता को नवीन विषयों की ओर अग्रसर किया है।

भारतेन्दु जी स्वयं पद्यात्मक निबन्धों की ओर प्रवृत्त नहीं हुए। किन्तु उनके अनुयायी प्रतापनारायण मिश्र इस ओर अधिक बढ़े। इन्होंने देशभक्ति और राजभक्ति के विषयों के अतिरिक्त बुढ़ापा गोरक्षादि विषय अपनी कविता के लिए चुने। इनकी कविता में भाव-व्यंजना हास्य, व्यंग्य और विनोद भरे। मिश्र जी की हर गंगा, 'तृप्यन्ताम्', 'बुढ़ापा' आदि कविताएं बहुत ही मनोरंजक हुई बन पड़ी है इनकी 'हिन्दी की हिमालय' नामक कविता भी बहुत प्रसिद्ध हुई।

उपाध्याय और प्रेमघन ने अपनी समकालीन कवियों के विषयों के अतिरिक्त विशेष उत्सवों और अवसरों पर आनन्द प्रकट करने के लिए प्रशस्तियां लिखी।

अम्बिकादत्त व्यास जी ने नवीन और प्राचीन दोनो विषयों पर जुटकर कविताएं लिखी जो कि उस समय की पत्र-पत्रिकाओं में

(4) निकली, परन्तु उन्हें इस दिशा में विशेष सफलता मिली।

ठाकुर जगमोहनसिंह ने नवीन विषयों पर कविताएँ न लिखकर प्राचीन संस्कृत काव्यों के प्राकृतिक वर्णनों के अनुकरण पर विध्यप्रदेश के रमणीय स्थलों का सुन्दर वर्णन किये, परन्तु उस समय हिन्दी काव्य का ध्यान इस ओर न गया, बाद में भारतेन्दु जी और द्विवेदी - युग की कड़ी श्रीधर पाठक जी में ऐसे प्राकृतिक वर्णनों के प्रति अनुराग दिखाई पड़ा